[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3678
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

# बद्रीनाथ आर्य के वॉश रंग पद्धति में प्रयोगधार्मिता

विशाल यादव
शोधार्थी, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना मध्यप्रदेश

भारतीय आधुनिक कला की प्रारंभ 19वीं सदी के मध्य से मानी जाती है। जब अंग्रेजी शासक ने यूरोपियन कला में भारतीय कलाकारों को प्रशिक्षित करने के लिए मद्रास, कलकत्ता, मुंबई, लाहौर व लखनऊ में कला महाविद्यालय स्थापति करने का निर्णय लिया। इन कला महाविद्यालयों ने स्वाभाविक अंग्रेजी पद्धति से चित्रण करने वाले अंग्रेजी कलाकारों की नियुक्ति हुई। इसी दौरान जापान के कलाकार हिदिसा और ताईकान कलकत्ता आए जिन्होंने वॉश पद्धति का प्रषिक्षण भारत में सर्वप्रथम अविन्द्रनाथ ठाकुर को दिया और इसी प्रकार भारत में वॉश पद्धति का जन्म हुआ। जब भारतीय वॉश पद्धति की बात आती है तो सबसे पहले बंगाल स्कूल का एक ऐसा वातावरण समाने आता है जिससे प्रशिक्षित होकर कलाकार देश के सभी महत्वपूर्ण कला केन्द्रों में स्थापित हुए और वॉश चित्रण का एक वातावरण पूरे देश में सृजित हुआ। ऐसे में बंगाल स्कूल के बाद लखनऊ वॉश चित्रण के लिए दूसरे केन्द्र के रुप में उभरा। यहां पर वॉश का दूसरा विकसित रुप सामने आए जहां बंगाल में अपारदर्शी या अल्पदर्शी रंगों का प्रयोग हुआ वहीं लखनऊ में इससे बचा गया। वॉश चित्रकला की तकनीक प्रारंभ मूलतः अविन्दनाथ ठाकुर ने कलकत्ता में किया था। उनके कुछ विषय लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय में नियुक्ति हुए इस प्रकार वह तकनीक लखनऊ में और विकसित हुई तथा बाद में इन सारे कलाकारों ने इस माध्यम में काम करते हुए इसका विकास किया जिसमें आर्पित कुमार हालदार, अब्दूल रहमान चुगताई, एल0 एम0 सेन व बद्रीनाथ आर्य जैसे कलाकारों ने जलरंग से वॉश पद्धति में प्रयोग करते रहे।

बद्रीनाथ आर्य के चित्रों में अपारदर्शी रंगों का प्रयोग नहीं दिखता है और उनके चित्रों में वॉश पद्धति की शुद्धता बनाए रखते हुए कार्य किया। चाहे आकारों की बनावट, रंगों रेखाओं मूर्त से अमूर्त रुप व ज्यामिति आदि रंगों में प्रयोग करके त्रिआयामी में अंलकारिक तत्व तो दिखाई देते हैं पर उनके विषय का मूल आधार इस देष के समाजिक एवं आर्थिक सरोकार ही हैं। बी0 एन0 आर्य वॉश चित्रण की अविश्वासनीय तकनीक के सिद्धहस्त हैं। उनके चित्रों में रंग का प्रभाव जीवन से स्पंदित तथा आंदोलित हैं। वॉश चित्रण को रंग एवं रेखा कविता के रुप में परिभाशित किया गया है। इस प्रकार के धुधली रेखाओं तथा रंगों के प्रयोग से चित्र के काव्यात्मक प्रभाव को बढ़ाया जाता है। रंग के विभिन्न वर्णो को जब एक दूसरे पर चढ़ाया जाता है तो विविध वर्णों का मायाजाल सा बिछकर चित्र आकर्षण को उतांन्त एवं जीवन्त बना देता है। वॉश चित्रण के प्रभाव अत्यन्त ही आध्यात्मिक, काव्यात्मक तथा विचार उत्प्रेरक होते हैं। ऐसे तो रससिद्ध कलाकार ने कहा है कि वॉश पद्धति में नियमित रुप से प्रयोग होते रहना चाहिए क्योंकि कला कभी पुरानी नहीं होती है। मानव के मन में भाव व रस निश्पति सनातन है जो आज भी कला सृजक के लिए प्रेरक तत्व हैं अतः इसकी उपेक्षा कर कोई कला नहीं हो सकती। जिस प्रकार वे सरल व्यक्ति थे उसी प्रकार उनकी कलाशैली भी सरल थी और किसी भी प्रकार की जटिलता से मुक्त थे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह कही जा सकती है कि उन्होंने चित्रण की एक विधि वॉश को अपने जीवन में प्रयोग किया और उन्होंने छोटे से लेकर ऐलिफैण्ड साइज के चित्र बनाए। यह वॉष शैली उनकी नितांत वैयक्तिक शैली थी। इनमें आर्य का वॉश चित्रण लयात्मक रेखांकन, पारदर्षी जलरंग त्रियामी प्रभाव के साथ मानव आकृतियों और पशुओं का चित्रण आधुनिक या अन्य धार्मिक विषयों को भारतीय पद्धति से प्रस्तुत करना आदि षामिल है जो उनके सहयोगियों और सहपाठियों से भिन्न थी। सृजन विकास के लिए होता है और प्रयोगधर्मिता इस सृजन को नए रुपों में ढाल कर स्थाई शक्ल देती है जो उनके चित्रों में देखा जा सकता है। आर्य के वॉश पद्धति में जल वाले रंग से अपनी जिस विशिष्ट पद्धति से चित्र बनाते थे उसे ही वॉश या इसे धुले हुए रंग का काम भी कहा जा सकता है। इसकी पद्धति है कागज पर पेंसिल रबर से एकदम ठीक–ठीक चित्र बनाकर या काठ कोयला से समान्यतौर पर चित्र बनाया जाता है। रंग लगने की गीली सतह पर चित्र बनाया जाता है। रंग लगने के बाद सूख जाने पर उसे स्थाई या पक्का करने के लिए पानी में डुबा कर फिर से सुखाना होता है लेकिन रंग लगाना शुरु करने से लेकर चित्र पूरा होने तक कभी भी पूरी तरह सूखी सतह पर काम नहीं किया जाता। पहले चित्र के बनाए खाके के विभिन्न अंषों में इच्छानुसार विभिन्न रंग भरा जाता है जहां इच्छा हो वहां रंग से छाया–सुशमा की दृष्टि भी की जाती है। बाद में चित्र की पृष्टिभूमि दूसरे बड़े–बड़े अंष में रंग भरने के लिए और पहले से लगाए रंग को मुलायम करने के एक या एकाधिक स्वच्छ पारदर्शी रंग का हल्का प्रलेप (वॉष) लगाया जाता है। इच्छानुसार फिर से रंग भरना, छाया–प्रकाष षेड्स देना, रेखाओं का प्रयोग, दूसरी सजावट रंग की सर्वाधिक उज्जवलता और विषेश गहराई का कुशलतापूर्वक चित्र में बंटवारा करके दिखलाना जहां एक षब्द में जिसे पूरा करना या फिनिश देना कहा जा सकता है लेकिन मन संतुष्ट न हो ता फिर से रंग का वॉश देना या फिर से एक–एक करके काम पूरा करना होता है। उदाहरण के लिए इस कलाकार का 'सॉवरी' शीर्षक चित्र देखा जा सकता है। यहां गोधूलि में अपनी केश राशि को संवारती सुन्दरी के हृदय की धड़कन को महसूस कर सकता है। इस प्रकार के मनोभावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले उत्कृश्ट चित्र जिनमें चुम्बकीय आकर्षण हैं वे हैं 'ताण्डव' 'भागीरथी' 'कालीदमन' 'बापू की ईश्वरीय कृपा' 'चूड़ामणि' तथा 'लंकादहन' आदि प्रमुख चित्र हैं।